भूकम्प का ज्योतिषीय विश्लेषण

Girija Shankar Shastri

Department of Sanskrit, Ishwar Sharan Degree College, Allahabad University, Allahabad

Abstract

There are three types of havoc in the world. Phyical Natural and Spiritnal. Nataral hazards came under natural havoc. As for as forezast of natural hacards are concerned they are mentioned in the Indian epics. Acharya Varahmihir has written a chapter on earth quake in Brihat Samhita. What are the causes of earth quake is also discussed in the Jyotisha Shastra. Acording to Vridha Gargh, earth quake is the result of the good and bad deeds of the people. According to Jyotish Shastra, the exact position and time of earthquake can be predicted on the basis of Vayavyadi quadrapled Mandal, Prahar, Planets and stars. The prediction of earth quake can also be made based on the position, action and anamolus behaviour of the birds and animals.

Previous examples of the earthquake and their andysis based on the planetry position provides a full proof of the various discussions made in Indian Shastras.

प्राय: समाज, देश या संसार में विपत्ति (दु:ख) तीन प्रकार के होते हैं-आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक। मन, बुद्धि आदि में उत्पन्न दु:ख आध्यात्मिक, मनुष्य पशु, पक्षी, सरीसृप तथा अन्य रोगादि कारणों से उत्पन्न दु:ख आधिभौतिक तथा ग्रह, नक्षत्र दैवी प्रकोपों से उत्पन्न दु:ख आधिदैविक कहे जाते हैं। जहाँ तक प्राकृतिक आपदाओं का प्रश्न है वह आधिदैविक दु:खों के अन्तर्गत आती हैं। आंधी, तूफान, अतिवृष्टि, उत्कापात, भूकम्प, ज्वालामुखी, समुद्री उत्पात (सुनामी) सूखा आदि सभी प्रकार की आपदायें प्राकृतिक आपदा कहलाती है। विचारणीय प्रश्न यह है कि प्राकृतिक आपदायें क्यों आती है? इस विषय में प्राचीन ऋषियों, महर्षियो से लेकर आधुनिक वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, विषय विशेषज्ञों तथा नीतिज्ञों ने विशद अध्ययन कर विभिन्न मत प्रकट किये हैं। जहाँ एक ओर प्राचीन मनीषी इन्हें दैवी क्रोध या देवताओं का प्रकोप मानते हैं, वही ज्योतिर्वैज्ञानिक ग्रहों या प्रकृति से होने वाले परिवर्तनों को इन आपदाओं का कारण मानते रहे हैं। इसके अतिरिक्त कुछ नीतिज्ञ तो इन प्राकृतिक आपदाओं को भी मनुष्य के कर्मों का फल मानते हैं। जैसे १९३४ में जब बिहार में भूकम्प आया तो महात्मा गांधी ने कहा यह ब्राह्मणों द्वारा निम्न जातियों के प्रति किये गये दुर्व्यवहार का प्रतिफल है। यद्यपि यह एक सीमा तक सत्य प्रतीत होता है कि प्राकृतिक आपदायें मनुष्य के कर्मो का ही प्रतिफल हैं, क्यों कि आज हम पूरी तरह प्रकृति को नष्ट करने पर तुले हैं, जिससे प्रकृति में विकृति आ गयी है। पर्यावरण की समस्या, ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस इफेक्ट, आदि किसी देवता या राक्षस का क्रोध न होकर मनुष्य द्वारा किये गये दुष्कर्मो का ही फल है । चेरापूंजी में सूखा, मुम्बई में बाढ़, सउदी अरब एवं आस्ट्रेलिया के ग्रेट सैण्डी मरुस्थल में हिमपात ये सब दैवी चमत्कार कम मनुष्य के कर्मो के प्रतिफल अधिक प्रतीत होते हैं।

जहाँ तक शास्त्रो में प्राकृतिक आपदाओं के विषम में भविष्यवाणी का प्रश्न है प्राय: सभी आपदाओं का परिचय ज्योतिष शास्त्र में मिलता है। इतने तकनीकी यंत्रों से युक्त होने के बाद भी किसी भी वैज्ञानिक की कोई भविष्यवाणी या पूर्वानुमान आज भी सही सिद्ध नहीं हो पा रहा है। विज्ञान शिखर तक आने के पश्चात् भी भूकम्प की निश्चित भविष्यवाणी करने में समर्थ नहीं हो सका है। वैज्ञानिक इस तथ्य को अब भी भली-भांति नहीं समझ पा रहे हैं कि पृथ्वी के कम्प कब, कहाँ और कितनी मात्रा में होगा? किन्तु प्राच्य ऋषियों और मनीषियों ने अपने दिव्यचक्षु द्वारा ज्योतिष विद्या को प्रकट किया, जिसमें यह तथ्य उद्घटित हुआ कि ज्योतिष शास्त्र प्रकृति के अनेक अनसुलझे रहस्यात्मक तथ्यों को वर्षो पूर्व बतलाने में पूर्णतया सक्षम हैं। आचार्य वराहमिहिर ने गर्गादि ऋषियों के मतों के आधारपर बृहत्संहिता ग्रथ में भूकम्प नामक एक अध्याय लिखा है। जिसमें प्रधानतया चतुर्दिक मण्डलों द्वारा भूकम्प से होने वाले परिणामों का वर्णन किया है। उपलब्ध ज्योतिषीय ग्रन्थों में गर्ग, वृद्धगर्ग, पाराशर, कश्यप, वशिष्ठ नारद तथा बृहस्पति के मतों के आधार पर भूकम्प की स्थिति, उसका स्थान एवं प्रभाव का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है।

भूकम्प के कारणों का कथानक के माध्यम से ज्योतिष शास्त्र के सहिंता ग्रन्थों में विस्तार से वर्णन है। जहाँ कश्यप की मान्यता के अनुसार विशाल जल जन्तुओं के धक्के से पृथ्वी में कम्प होता है, वहीं गर्ग के अनुसार पृथ्वी के भार से थके हुए

Vijnana Bharati

दिग्गजों के विश्राम से भूकम्प आता है। गर्ग कहते है कि चार बड़े दिग्गज इस पृथ्वी के चारों दिशाओं में धारण किये हुए है, जब ये श्वास लेते हैं उस समय पृथ्वी में कम्प आता है। इन चारों के क्रमशः नाम है- वर्धमान, सुवृद्ध, अतिवृद्ध तथा पृथुश्रवा। इसमें वर्धमान नामक दिग्गज पूर्व दिशा में, सुवृद्ध दक्षिण दिशा में, अतिवृद्ध पश्चिम दिशा में तथा पृथुश्रवा उत्तर दिशा में पृथ्वी को धारण किये हुए हैं। ऋषि वशिष्ठ इन दोनों आचार्यों के मतों से असहमत होते हुए कहते हैं, कि जब प्रचण्ड वायु परस्पर टकराकर पृथ्वी को बाधित करती है तब भूकम्प होता है। वृद्धगर्ग के अनुसार प्रजाओं के अदृष्ट (धर्माधर्म) के द्वारा भूकम्प होता है। महर्षि पाराशर इन सभी आचार्यों से भिन्न अपना मत प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि पर्वतों के डगमाने पर पृथ्वी में कम्प होता है। किन्तु ये सभी कथानक निराधार एवं कपोल कल्पित प्रतीत होते हैं किन्तु यदि इन कथानकों की आध्यात्मिक विवेचना की जाय, तो यह सिद्ध होता है कि ये कथन निश्चित ही ऐसे सूक्ष्म तथ्यों की ओर संकेत करते हैं, जिनका आध्यात्मिक स्वरूप अत्यन्त गुह्य है। यथा-सूर्य को ही वैदिककाल में विष्णु, इन्द्र, वरुण, पूषा, धाता, अर्यमा आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। सूर्य की आकर्षण शक्ति ही पृथ्वी को धारण कर रही है। सूर्य सिद्धान्त में कहा गया है कि ब्रह्माण्ड के मध्य में यह पृथ्वी ब्रह्मा की धारणात्मिका शक्ति के बल पर शून्य में स्थित है। सूर्य एवं चन्द्रमा के द्वारा निर्मित कालखण्ड (समय) ही कच्छप, दिग्गज तथा लोकपाल है। सूर्य की किरणें ही शेष नागके फण है। अतएव सूर्य किरणों के आघात-प्रत्याघात से, सूर्य पर विस्फोट से तथा आधुनिक मत से ओजोन परत में छिद्र से पृथ्वी पर कम्प होता है। इस गम्भीर तथ्य को स्पष्ट करने के लिए ही ज्योतिष आचार्यों के द्वारा साधारण बुद्धि वाले मनुष्यों के लिए पूर्वोक्त कथाओं का आश्रय लिया गया है।

भूकम्प की सटीक स्थिति जानने के लिए ज्योतिष शास्त्र जिन अनेक तथ्यों को उद्घाटित करता है, उनमें वाय्वादि चतुर्दिक मण्डल, चतुर्दिक बेला, नक्षत्रों एवं ग्रहों के संयोग, सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण कालिक स्थिति, अमावस्या एवं पूर्णिमाकालिक ग्रह स्थिति तथा पशु पक्षियों की असामान्य हरकतें प्रमुख हैं।

मण्डलों के अनुसार भूकम्प की स्थिति

कुल चार मण्डल कहे गये हैं जो क्रमशः, इन्द्र, वरुण, वायु तथा अग्नि मण्डल है। इन मण्डलों में अभिजित के सहित २८ नक्षत्रों का चतुर्धा विभाग किया गया है।

इन्द्र मण्डल में अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, रोहिणी, ज्येष्ठा, उत्तराषाढा तथा अनुराधा नक्षत्र आते हैं।

वरुण मण्डल में रेवती, पूर्वाषाढा, आर्द्रा, आश्लेषा, मूल, उत्तराभाद्रपद तथा शतभिषा नक्षत्र हैं।

वायु मण्डल में उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, पुनर्वसु मृगशिरा तथा अश्विनी है।

अग्नि मण्डल में कृतिका, पुष्य, विशाखा, भरणी, मघा, पूर्वाभाद्रपदा तथा पूर्वाफाल्गुनी ये सात नक्षत्र कहे गये हैं।

नक्षत्रों का यह वर्गीकरण प्रायः सभी आचार्यों को मान्य है, किन्तु कुछ आचार्यों ने केवल इन्द्र मण्डल को चन्द्र मण्डल कहा है। किन्तु नक्षत्रों का क्रम पूर्ववत् ही है।

वेला के अनुसार

नक्षत्र मण्डलों की भाँति गर्गादि ऋषियों ने वेला कम्प को भी चार भागों में विभाजित किया है।

१. वायव्य कम्प २. अग्नि कम्प

३. इन्द्र कम्प ४. वरुण कम्प

दिन रात्रि के क्रम से इन्हें चार भागों में बाँटा गया है, कहा गया है कि दिन और रात्रि के पूर्व भाग में वायव्य कम्प होता है। मध्याह्न तथा अर्धरात्रि में अग्नि कम्प होता है। दिन और रात्रि के तीसरे भाग में इन्द्र कम्प होता है तथा दिन रात्रि के चौथे अंश में वरुण कम्प होता है। यथा-

रात्रौ दिवा च पूर्वाह्णे वायव्यः कम्प उच्यते।
मध्याह्ने चार्द्धरात्रे च हौताशः कम्प उच्यते।
दिवारात्रौ तृतीयेंऽशे माहेन्द्रश्चाभिगीयते।
चतुर्थे वर्तमानेंऽशे वारुणं निर्दिशेद् बुधः।।

किन्तु वेला कम्प का यह मत अन्य आचार्यों को मान्य नहीं है। महर्षि पाराशर के अनुसार दिन-रात्रि के चार भाग कर लेने चाहिए। जिसमें दिन के प्रथम भाग में वायु, दूसरे भाग में अग्नि, रात्रि के प्रथम भाग में इन्द्र तथा अन्तिम भाग में वरुण कम्प को जानना चाहिए। इसी मत को गर्ग भी मानते हैं और उसे स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं कि-

कृत्वा चतुर्धाहोरात्रं द्विधाहोऽथ द्विधा निशम्।
देवताश्रययोगाच्च चतुर्था भगणं तथा।।
पूर्वे दिनार्द्धे वायव्य आग्नेयोऽर्द्धे तु पश्चिमे।
ऐन्द्रः पूर्वे च रात्र्यर्द्धे पश्चिमार्द्धे तु वारुणः।।
चत्वार एवमेते स्युरहोरात्रविकल्पजाः।
निमित्तभूता लोकानामुल्कानिर्घातभूचलाः।।

आचार्यों की मान्यतानुसार जिस मण्डल में कम्प होता है उसी मण्डल के स्वभाव से उत्पन्न द्रव्य, प्राणी तथा स्थान पीड़ित होते हैं। यथा-

भूकम्पादिमहोत्पातो जायते यत्र मण्डले।
तत्तत्स्वभावजं द्रव्यं जन्तून् देशांश्च पीडयेत्।।

आचार्य वराहमिहिर ने बृहत्संहिता नामक ग्रंथ में इन मण्डलों

Vinana Bharati

में भूकम्प से ७ दिन पहले होने वाले लक्षणों को बताया है। इन लक्षणों को जान लेने से भूकम्प की स्थिति का पूर्वानुमान हो जाता है। वायव्य मण्डल के कम्प में सात दिन पूर्व आकाश धुएँ से व्याप्त दिखाई पड़ता है। पृथ्वी से धूल उड़ाती हुई तथा वृक्षों को उखाड़ती हुई हवा चलती है तथा सूर्य की किरणें मन्द प्रतीत होती हैं। इसमें कम्प होने पर सौराष्ट्र (गुजरात) कुरु, मगध, दशार्ण तथा मत्स्यदेवासी पीड़ित होते हैं। यदि वायव्य मण्डल में भूकम्प होता हैं, तो उसका परिमाण दो सौ योजन तक रहता है। अर्थात् आठ सौ कोश तक भूकम्प का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

आग्नेय मण्डल के नक्षत्रों में भूकम्प होने से सात दिन पहले दिग्दाह (मानो सारी दिशायें, अग्नि से जल रही हों) के साथ तारा अथवा उल्कापात तथा प्रज्वलित आकाश हो जाता है। वायु की सहायता से अग्नि विचरण करती है। इसमें अश्मक, अंग (बिहार), बंग (बंगाल), बाहीक, कलिंग, द्रविड़ तथा शबरदेशवासी पीड़ित होते हैं। अग्नि मण्डल में भूकम्प होने पर दस योजन अर्थात् चालीस कोश तक का स्थान प्रभावित होता है।

इन्द्र मण्डल के नक्षत्रों में यदि कम्प हो, तो उसके सात दिन पहले पर्वत के समान विशाल, गम्भीर शब्द करने वाले, बिजली वाले, महिषशृंग, भंवरे तथा साँपों के समान कान्ति वाले बादल वर्षा करते हैं। इसमें काशी, युगन्धर, पौरव, किरात, कीर, अभिसार, हल, मद्र, अरब देश, सुराष्ट्र तथा मालव देश के निवासी पीड़ित होते हैं। इन्द्र मण्डल में भूकम्प होने पर लगभग साठ योजन अर्थात् दो सौ चालीस कोश तक भूकम्प का प्रभाव रहता है।

वरुण मण्डल के नक्षत्रों में कम्प होने से सात दिन पूर्व समुद्र और नदी के तट में रहने वाले प्राणियों का नाश तथा अतिवृष्टि होती है। इसमें गोनर्द, चेदि, कुकुर, किरात तथा वैदेह देशवासी पीड़ित होते हैं। वरुण मण्डल में भूकम्प होने पर एक सौ अस्सी योजन अर्थात ७२० कोश तक इसका प्रभाव होता है।

नक्षत्रों के आधारपर कहे गये प्राचीन स्थानों के आज के समय में प्रचलित नाम इस प्रकार हैं-

नक्षत्र	*प्राचीन नाम*	*आधुनिक स्थान एवं नाम*
१. अश्विनी	अश्मक	पेशावर प्रदेश (पुरुषपुर), कुछ लोग दक्षिण भारत की अन्तिम सीमा मानते हैं।
२. भरणी	किरात	करांची पाकिस्तान की राजधानी, कुछ नेपाल से पूर्व भूभाग को तथा आसाम का नागा स्थान मानते हैं।
३. कृत्तिका	कलिंग	उड़ीसा प्रान्त के दक्षिण तथा द्रविड़ के उत्तर-पूर्वी समुद्र के तट को वर्तमान भुवनेश्वर स्थान को कहा गया है।
४. रोहिणी	शूरसेन	मथुरा वाले स्थान को कहा गया है। वसुदेव के पिता का नाम शूर सेन था।
५. मृगशिरा	उशीनगर	गान्धार (कान्धार) पेशावर से डेरागाजीखां तक। महाभारत में वर्णित शकुनि तथा गान्धारी यहीं की थीं। इसे धूर्त देश माना जाता था।
६. आर्द्रा	जलजीव	(मत्स्य प्रान्त)जलगाँव अथवा मछलीपत्तनम् स्थान,अन्य आचार्यों के अनुसार जयपुर (अलवर)को महाभारत में इसे विराटनगर कहा गया है।
७. पुनर्वसु	अश्मक	अश्विनी के क्रम में लिखा गया है।
८. पुष्य	मगध	बिहार प्रान्त पटना के आसपास का स्थान। जरासन्ध की राजधानी।
९. श्लेषा	आसिक देश	पंजाब प्रान्त का पूर्व नाम, असिक्नी नदी के कारण।
१०. मघा	अंग देश	वर्तमान बिहार प्रान्त का भागलपुर स्थान।
११. पूर्वा	पाण्ड्यदेश	वर्तमान दिल्ली का पूर्व नाम पाण्ड्य देश था।
१२. उत्तरा	उज्जयिनी	मध्य प्रदेश का मालवा प्रान्त अवन्तिका अथवा उज्जैन महाकाल मन्दिर यहीं है।
१३. हस्त	दण्डक	दण्डकारण्य वर्तमान नासिक पंचवटी। (रामायण-काल में यहाँ अगस्त्य आश्रम था।)
१४. चित्रा	कुरु	कुरुक्षेत्र, पंजाब के अम्बाला और कर्नाल जिले का भू-भाग कुरु से पहले इस प्रदेश का नाम ब्रह्मावर्त था।
१५. स्वाती	कम्बोज	काम्बे खम्भात की खाड़ी वर्तमान गुजरात प्रान्त को कहते हैं।
	काश्मीर	सिन्धु नदी का उद्गम-स्थल वर्तमान काश्मीर प्रान्त।
१६. विशाखा	कोशल	अयोध्या, महाकोशल उड़ीसा के सम्भलपुर को कहते हैं।
१७. अनुराधा	पौण्ड्र	बंगाल का बाँकुरा मिदनापुर का भूभाग।

Vijana Bharati

१८. ज्येष्ठा	मध्यदेश	भारत देश का मध्य भाग।
१९. मूल	मद्रदेश	व्यास एवं सिन्धु नदी के मध्य। यह शल्य एवं माद्री का स्थान था।
२०. पूर्वाषाढा	काशी	वाराणसी जिले का सम्पूर्ण भूभाग।
२१. उत्तराषाढा	अर्जुनायन	यमुना नदी का पश्चिमी तट, मथुरा से दिल्ली तक।
	यौधेय	लुधियाना पंजाब से अलवर तक का भूभाग।
	शिवि	मेवाड़ राज्य राजा शिवि की राजधानी थी। वर्तमान उदयपुर (राजस्थान)।
	चेदि	चन्देलों की राजधानी बुन्देलखण्ड एवं मध्यप्रदेश तथा ग्वालियर का भाग।
२२. श्रवण	कैकय	अफगानिस्तान का पश्चिमोत्तर भूभाग, कैकेयी के पिता का स्थान।
२३. धनिष्ठा	पञ्चनद	पंजाब की पाँचों नदियाँ जहाँ मिलकर एक हो जाती है।
२४. शतभिषा	सिंहल	लंकाराज्य सिंहली भाषा के बौद्धकालीन ग्रन्थ अभी भी मिलते हैं।
२५. पूर्वाभाद्र	बंग	वर्तमान सम्पूर्ण बंगाल प्रान्त अथवा दक्षिणी बंगाल का भूभाग।
२६. उत्तराभाद्र	नैमिष	उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले में स्थित नैमिषारण्य तीर्थ है। कभी यहाँ शौनकादि ८८ हजार ऋषियों को सूत जी ने पुराण की कथा सुनायी थी।
२७. रेवती	केरल	तुंगभद्रा नदी से कावेरी नदी पर्यन्त वर्तमान केरल है। यह चेन्नई से सटा हुआ प्रान्त है।

ग्रह एवं नक्षत्रों की स्थिति द्वारा भूकम्प

ज्योतिष शास्त्र के संहिता ग्रन्थों में ग्रह स्थितिवशात् भूकम्प योग तथा भूविनाश योगों का उल्लेख प्राप्त होता है। नारद रचित मयूर चित्रकम् नामक ग्रन्थ में ग्रहस्थितिवश भूकम्प योग बताया गया है। यथा-

उपप्लवात् सप्तमगो महीजो महीसुतात् पञ्चमगो यदाबुधः।
बुधाद्विधुः स्याच्च चतुष्टये स्थितः स चेह भूकम्पनयोग ईरितः।।[१]

अर्थात् राहु से मंगल सातवें हो, मंगल से बुध पांचवे हो, चन्द्रमा से बुध किसी केन्द्र में हो तो भूकम्प नामक योग होता है। भूविनाश योग बताते हुए कहा गया है कि -

अर्कसौरी भौमसौरी तमः सौरीज्यमंगलौ।
गुरुसौरी महायोगो महीनाशाय कल्पते।।[२]

अर्थात् - रवि शनि, मंगल शनि, राहु शनि, बृहस्पति शनि का महायोग पृथ्वी के नाश के लिए होता है। अर्थात् इसमें भी भूकम्प आने की स्थिति बनती है।

इन तथ्यों के आधार पर निम्नलिखित ग्रह स्थिति से भूकम्प की स्थिति बनती है।

१. भूकम्प के समय ग्रह प्रायः त्रिकोण या केन्द्र में एक साथ अथवा सम सप्तम राशि या नवांश में स्थित होते हैं।

२. भूकम्प के समय प्रायः लग्न, चतुर्थ, संप्तम, अष्टम, दशम तथा द्वादश स्थान दूषित ग्रहों से युक्त होते हैं।

३. भूकम्प के समय का नक्षत्र पृथ्वी या वायु प्रधान होता है।

४. भूकम्प के समय चन्द्रमा तथा बुध प्रायः साथ अथवा एक दूसरे के केन्द्र में अथवा एक ही नक्षत्र में स्थित होते हैं।

५. भूकम्प के समय शनि तथा मंगल एक राशि पर एक नवांश में एक साथ स्थित होते हैं।

६. भूकम्प के समय मंगल, बृहस्पति अथवा शनि में से कोई न कोई एक ग्रह वक्री अवश्य होता है।

सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण कालिक ग्रह स्थितिवश भूकम्प

१. सूर्यादि ग्रहणों के समय सूर्य एवं चन्द्रमा की स्थितिवश भूकम्प की स्थिति जानी जा सकती है।

२. ग्रहण से दो दिन पूर्व तथा दो दिन पश्चात् तक भूकम्प की स्थिति बनती है।

३. सूर्य एवं चन्द्रमा पृथ्वी तत्त्व की राशि में होने से भूकम्प आते हैं।

४. राहु केतु के अतिरिक्त मंगल अथवा शनि से जब सूर्य या चन्द्र दृष्ट हों तो भूकम्प की स्थिति बनती है।

अमावस्या एवं पूर्णिमा कालिक ग्रह स्थिति

अमावस्या तथा पूर्णिमा तिथि पर सूर्योदय एवं सूर्यास्त कालिक लग्न चक्र में जब लग्न पृथ्वी तत्व का हो तथा पापग्रहों से प्रभावित हो रहा हो अथवा लग्न पाप कर्तरी प्रभाव में हो तो पाँच दिन पूर्व या बाद तक भूकम्प की स्थिति बनती है।

१. भूकम्प का समय सामान्यतः आधीरात से सूर्योदय के बीच तथा दोपहर से सूर्यास्त के बीच होता है।

२. पृथ्वी जब सूर्य के नजदीक होती है, जैसे- शरद् ऋतु या वसन्त ऋतुओं में गर्मी की अपेक्षा भूकम्प की संभावना अधिक होती है।

३. प्रायः सूर्य की संक्रान्ति से एक दिन आगे पीछे तक भूकम्प की सम्भावना अधिक रहती है।

पशु पक्षियों की असामान्य हरकतों द्वारा भूकम्प

जब जंगली पशु गांव या नगर की ओर भाग कर आने लगें, पक्षी सामान्य से अधिक कलरव करने लगें, जल जन्तु जल से निकलकर बाहर भागने लगे, कुत्ते आकाश की ओर मुँह करके

Vijnana Bharati

चिल्लाने लगें, खूटे में बधे हुए पशु विशेषकर गायें जब ऊपर की ओर उछलने लगे तथा हुंकार करने लगें, रात्रि अथवा दिन के समय सियार फेंकरने लगे, वातावरण बिना समय के भी धूलि धूसरित हो जायें, नक्षत्र एवं तारागण विकृत दिखाई पड़ने लगें, उल्कापात हो, भंयकर वायु चल रही हो, बिना बादल के भी वर्षा होने लगे अथवा रक्त हड्डी, तेल आदि की वर्षा होने लगे, अग्नि की लपटें चिंगारीदार दिखाई दें, कुँआ, वापी या तालाबों के जल में उछाल दिखाई दे, रात्रि के समय इन्द्र धनुष दिखाई दे, संध्या में विकार दिखाई दे, चन्द्रमा या अन्य ग्रहों में परिवेष (घेरा) दिखाई दे, नदियों की गति में विपरीतता दिखाई दे, आकाश में वाद्य बजता सुनाई पड़ने लगे, बिल में रहने वाले सर्पादि जीव जन्तु अचानक अधिक मात्रा में निकले लगें अथवा अन्यान्य प्रकृति विरुद्ध लक्षण दिखाई देने लगें, तो एक सप्ताह के भीतर भूकम्प की स्थिति बनती है।

उपर्युक्त सिद्धान्तों के आधार पर यहाँ पूर्व में आये हुये बड़े भूकम्पों की स्थितियों का विचार किया जा रहा है। जो सत्य के काफी निकट रहा है। यथा-

१. ***बिहार का भूकम्प***-१५.१.१९३४ ई. दिन सोमवार, समय २.१३ मिनट दोपहर, स्थान पटना, नक्षत्र उत्तराषाढा प्रथम चरण, धनु राशि, वृष लग्न, मिथुन नवांश।

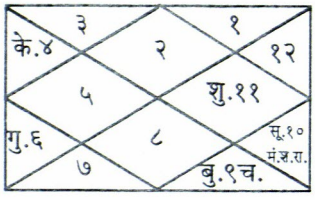

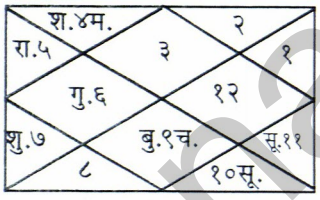

यह सूर्य का मकर राशि में प्रवेश तथा अमावस्या का भी दिन था। शनि राशि तथा नवमांश दोनों में मंगल के साथ था। शुक्र उसी दिन वक्री हुआ था। नवमांश में शनि मंगल के साथ तथा दोनों सूर्य तथा चन्द्र के अधिशत्रु है। इस समय सूर्य, शनि, मंगल, तथा राहु मकर के थे। बुध तथा बृहस्पति वर्गोत्तम में होते हुए परस्पर राशि परिवर्तन कर रहे हैं। अत एव बड़े भूकम्प की स्थिति बनी हुयी थी।

२. १५.३.१९३५ई.दिन शुक्रवार, समय ४.०६मिनट सायं,स्थान बरेली (उ.प्र.), नक्षत्र पुष्य द्वितीय चरण, कर्क राशि, सिंह लग्न,

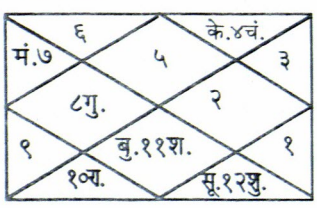

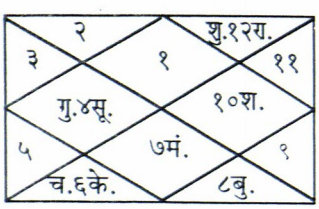

३. २६.५.१९३६ ई. दिन बुधवार, समय ११.४९ मिनट दोपहर, स्थान शाहजहाँपुर (उ.प्र.), नक्षत्र मघा प्रथम चरण

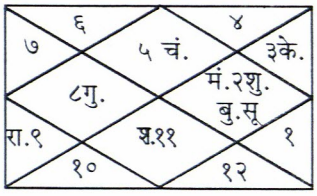

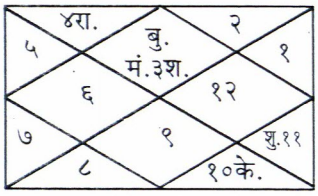

४. २.६.१९२७ ई. दिन रविवार, समय १०.०६ मिनट, रात्रि, स्थान रीवा (म.प्र.) नक्षत्र पुनर्वसु द्वितीय चरण

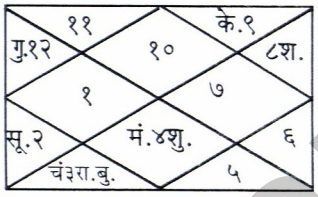

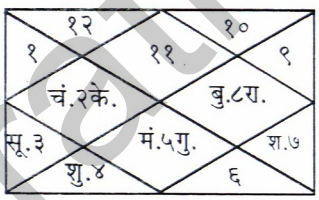

५. २८.१.१९५८ ई. दिन रविवार, समय ११.०५ मिनट, दोपहर स्थान बद्रीनाथ (उ.प्र.) नक्षत्र पुष्य द्वितीय चरण, कर्क राशि, कुम्भक लग्न, मेष नवांश

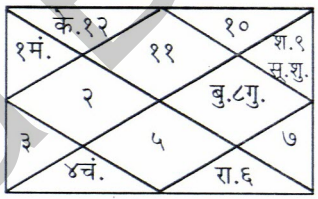

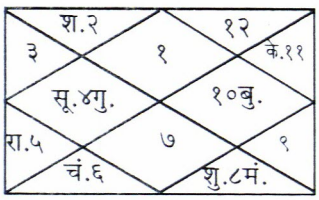

६. १०.१०.१९५६ ई. दिन बुधवार, समय ०९.०२ मिनट रात्रि, स्थान दिल्ली नक्षत्र मूल चतुर्थ चरण

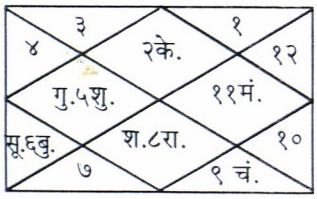

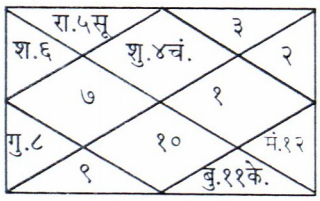

७. २७.०८.१९६० ई. दिन शनिवार समय ०९.२९ मिनट रात्रि स्थान दिल्ली, नक्षत्र स्वाती तृतीय चरण

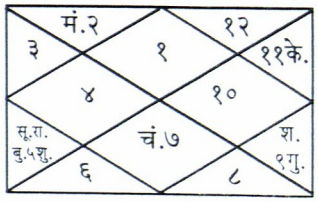

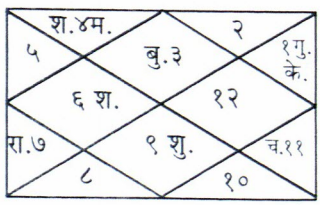

Vijnana Bharati

८. २७.७.१९६६ ई. दिन सोमवार, समय ४.११ मिनट सायं स्थान बरेली (उ.प्र.) नक्षत्र चित्रा चतुर्थ चरण,

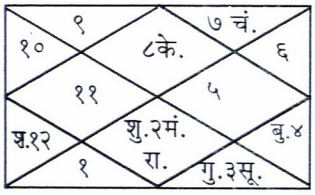

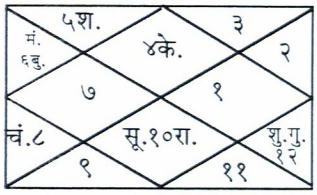

९. २९.७.१९६६ ई. दिन मंगलवार, समय ९.२८ मिनट सायं, स्थान बरेली उ.प्र. नक्षत्र शतभिषा प्रथम चरण

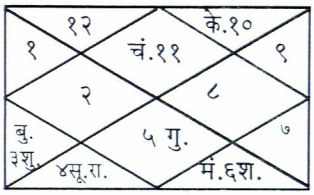

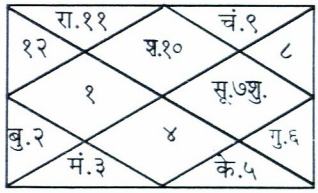

१०. २१.८.१९८८ दिन रविवार, समय ४.२९ मिनट भोर में, स्थान पटना (बिहार) नक्षत्र अनुराधा द्वितीय चरण,

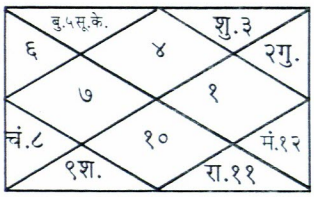

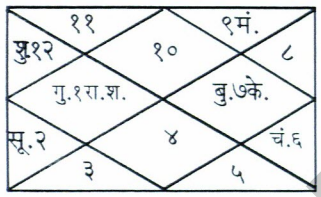

११. २०.१०.१९९१ ई. दिन रविवार, समय २.५३ मिनट रात्रि, स्थान देहरादून (उ.प्र.) नक्षत्र शतभिषा चतुर्थ चरण

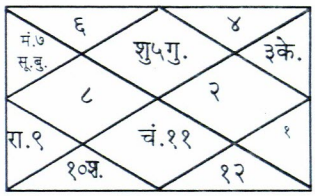

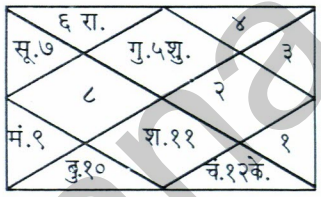

१२. २६.०१.२००१ ई. दिन शुक्रवार, समय ०८.४६ मिनट प्रातः, स्थान भुज (गुजरात) नक्षत्र धनिष्ठा द्वितीय चरण

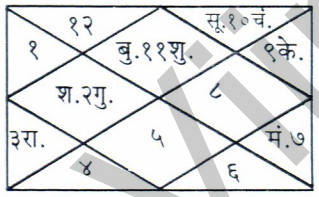

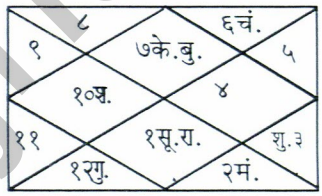

१३. २६.१२.२००४ ई. दिन रविवार, समय ९.५१ मिनट प्रातः, स्थान अण्डमान, नक्षत्र मृगशिरा, चतुर्थ चरण

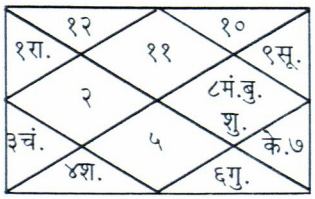

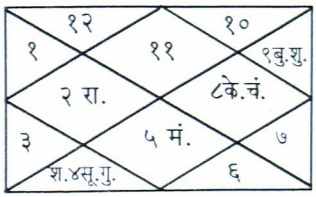

१४. ४.१.२००५ ई. दिन मंगलवार, समय २.४३ मिनट अपराह्न, स्थान अण्डमान, नक्षत्र चित्रा द्वितीय चरण

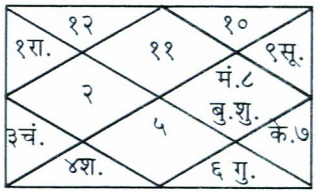

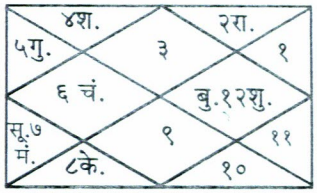

(क) असम का भूकम्प ८.७.१९७५ जिसकी तीव्रता ६.७ थी। अमावस्या के एक दिन पूर्व हुआ था। चन्द्रमा तथा बुध दोनों मिथुन राशि में थे। चन्द्र राहु सामने थे। चन्द्रमा बुध केतु साथ थे। सूर्य शनि सम सप्तक योग बना रहे थे।

(ख) कोयना का भूकम्प १७.१०.१९७३ तीव्रता ५.२ पूर्ण संक्रमण का दिन था। बुध चन्द्रमा में त्रिकोण सम्बन्ध थे। चन्द्र बाह्य परिधि पर था। चन्द्रमा के साथ केतु था। शनि उस दिन वक्री था। शनि, चन्द्रमा तथा केतु के साथ था। शनि मंगल से छठे थे। नवमांश में कर्क का मंगल शनि के विपरीत (सामने) था। कन्या का सूर्य, बृहस्पति के सामने था। वृष का बुध शनि के सामने था। शुक्र, बृहस्पति को सामने देख रहा था।

(ग) एक अन्य भूकम्प कोयना में ही १२.१२.१९६७ को आया, तीव्रता ७.५ यह पूर्णिमा के दिन था। सूर्य का प्रवेश के ४ दिन पूर्व, १६.१२.१९६७ को पीछे हटता शनि से सीधे ९वें स्थान पर, बृहस्पति वक्री कर २२वें स्थान पर। प्लूटो भी वक्री कर २६वें स्थान पर। चन्द्रमा, केतु के नक्षत्र अश्विनी में राहु के साथ। बुध वक्री होकर १०वें स्थान पर। मंगल शनि से छठें, मंगल कर्क के डेल्टा में कर्क के सामने। बृहस्पति शुक्र के सामने था।

(घ) ईरान का भूकम्प ११.५.१९७६ शनि तथा मंगल दोनों राशि तथा नवमांश में एक साथ थे। बृहस्पति तथा शुक्र अस्त थे। बुध भूकम्प के दिन वक्री था। चन्द्रमा, बुध से तीसरे स्थान पर था। सूर्य केतु के साथ था। नवमांश में शुक्र, बृहस्पति, केतु तथा बुध राहु के सामने थे। शनि मंगल तथा बुध एक दूसरे के सामने थे।

(ङ) उत्तरी इटली का भूकम्प १३.९.१९७६ मंगल तथा केतु एक साथ थे । शुक्र मंगल के साथ था। शनि मंगल की राशि तथा नवमांश दोनों में देख रहा था। सूर्य तथा शनि, मंगल के सामने थे। बृहस्पति तथा बुध वक्री थे। शनि बृहस्पति के सामने तथा मंगल शुक्र के विरुद्ध सामने था।

(च) ईरान का भूकम्प २.९.१९६२ रविवार अमावस्या के ठीक बाद यथा ३०.८.१९६२। चन्द्रमा बुध के साथ था चन्द्र नक्षत्र में, बृहस्पति पृथ्वी के विपरीत या वक्री था। बुध वक्री था। मंगल शनि को देख रहा था। मंगल, शनि के नवांश में तथा शनि

Vijnana Bharati

मंगल के नवमांश में। नवमांश में सूर्य तथा केतु, मंगल तथा बृहस्पति के विपरीत थे।

(छ) कैलिफोर्निया भूकम्प ९.२.१९७१, १० वें का पूर्ण चन्द्रमा (पूर्णिमा) सूर्य का प्रवेश १२वां था। बुध चन्द्रमा के नक्षत्र का तथा चन्द्रमा के सामने था। मंगल, बृहस्पति के साथ युति कर रहा था। नवमांश में शनि, राहु तथा बृहस्पति तुला राशि के थे। शनि, धनु के मंगल को देख रहा था। मंगल बृहस्पति, शुक्र तथा बुध सभी सामने से देख रहे थे।

(ज) चीन का भूकम्प २८.७.१९७६ अमावस्या २७.७.१९७६ को था। शनि की युति सूर्य से थी। चन्द्रमा कर्क के बुध से युति, बुध के नक्षत्र में थी। शनि राहु के वर्ग में तथा मंगल राहु से छठे स्थान पर। शनि बृहस्पति के सामने तथा बुध, शुक्र, के सामने था।

(झ) टर्की का भूकम्प २३.५.१९७१ अमावस्या २४ को थी। शनि अस्त था तथा सूर्य से युति १७.५.१९७१ से प्रारम्भ हुई थी। वक्री बृहस्पति सूर्य के ठीक विपरीत २३.६.१९७१ को हुआ। चन्द्र की युति बुध से शुक्र नक्षत्र में चल रही थी। नवमांश में मंगल तथा शनि की परस्पर राशि परिवर्तन योग था। मंगल, राहु एक साथ थे। बृहस्पति तथा मंगल, बुध एवं शुक्र के सामने थे।

(ञ) ईरान का भूकम्प १७.१९७८ पूर्णिमा १७ को, सूर्य का प्रवेश १७ को। राहु की दृष्टि मंगल पर, शनि वक्री मंगल को देख रहा था। बृहस्पति की दृष्टि चन्द्र पर। बुध उस दिन स्थिर था। शनि विपरीत शुक्र के सामने था।

(ट) मेक्सिको का भूकम्प १४.३.१९७९ पूर्णिमा १४ को थी तथा उसी दिन सूर्य की संक्रान्ति भी थी। १४ को ही शनि एवं मंगल के ठीक सामने थे, राहु मंगल के सामने था। बुध उसी दिन वक्री हुआ था। बुध एवं शुक्र की युति थी। दोनों चन्द्रमा के सामने थे। उस दिन शनि मंगल के सामने था।

(ठ) ईरान का भूकम्प २९.७.१९८१ डा.बी.वी रमन द्वारा इसकी भविष्यवाणी पूर्व में ६.७.१९८१ को गयी थी। जिसे उन्होंने नेशनल जियो फिजिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट हैदराबाद में अपने व्याख्यान में कहा था। यह जुलाई ३१,१९८१ के पूर्ण सूर्यग्रहण की पूर्व संध्या थी। मंगल तथा शनि की एक दूसरे पर दृष्टि के साथ-साथ, राशि एवं नवमांश में युति भी थी। बृहस्पति की युति शनि से तथा चन्द्र की मिथुन व बुध से उसी नक्षत्र में थी। दोनों की मंगल के साथ भी युति थी। बुध वक्री होकर १.१.१९८१ को अस्त हो रहा था।

(ड) ईरान का भूकम्प २५.४.१९६० शनि की युति बृहस्पति के साथ। शनि की मंगल के साथ दृष्टि। बृहस्पति २०.४.१९६० को वक्री हो गया था। शनि वक्री २६.४.१९६० को हो रहा था। शनि, बुध एवं शुक्र के सामने था।

शनि तथा मंगल पापी या कष्टदायी इसलिये होते है। क्योंकि शनि अत्यधिक ठंडा तथा मंगल अत्यधिक सूखा है। ठंड तथा सूखापन एक साथ विनाश के कारक होते हैं। अतः जब दोनो की युति अथवा दोनों की परस्पर दृष्टि अथवा परस्पर राशि परिवर्तन होता है, तब ये दोनों सभी पदार्थो को नष्ट कर के सुखा देते हैं। अतः इस स्थिति में भूकम्प, स्खलन, अथवा भूविनाश का योग बन जाता है।

सन्दर्भ-

१. मयूर चित्रकम् अध्याय २/ श्लोक ६२
२. मयूर चित्रकम् अध्याय १६/श्लोक ३५

Vijnana Bharati